धनकवडी (पुणे)। 'अमृत महोत्सव' का उद्घाटन करने के पश्चात् ग्रुप फोटो में हैं विधायक भीमराव तापकीर, ब्र.कु.सुलभा, ब्र.कु.सुनंदा, ब्र.कु.नलिनी, ब्र.कु.करूणा तथा अन्य।

बेतनटी (उड़ीसा)। 'प्लेटिनम जुबली' कार्यक्रम में ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु.लीना तथा मंचासीन हैं डी.एफ.ओ. विजय कुमार पंडा, ब्र.कु.सावित्री, ब्र.कु.बनिता, ब्र.कु.चंद्रमोहन ।

भागलपुर। बिहार सरकार के लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण मंत्री अश्विनी चौबे को आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.अनिता साथ में है ब्र.कु.रेखा।

न्यू रकर्सीपार (भिलाई)। 'स्वर्णिम दुनिया की झांकी वा आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी' का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते हुए क्षेत्रीय पार्षद राजेश दाण्डेकर, आर.के.साहू, वर्मा जी, ब्र.कु.नेहा, ब्र.कु.अंजली।

दिल्ली। दिल्ली इंटरनेशनल मेराथन दौड़ में भाग लेते हुए शांतिवन के ब्र.कु.मोहन।

प्रश्न -आप कहते हैं कि आपके पास भगवान आते हैं। यों तो सभी अपने गुरुओं को भगवान कहते हैं, हम कैसे मानें कि आपके यहाँ भगवान आते हैं?

उत्तर -आपको प्रश्न करना उचित ही है। अनेक भगवान देखकर सच्चे भगवान के बारे में भ्रम होना स्वाभाविक ही है। पहले तो हमें ये जान लेना चाहिए कि भगवान है कौन? तभी हम निर्णय कर सकेंगे कि भगवान कहाँ आते हैं। भगवान निराकार है, वे देह रहित, जन्म-मरण से न्यारे, ब्रह्मा-विष्णु-शंकर के भी रचयिता हैं, सृष्टि के बीज रुप है, ज्ञान के सागर, प्रेम के सागर, सर्वशक्तिवान हैं, वे सर्व गुणों के सिन्धु हैं। अत: किसी भी देहधारी को भगवान नहीं कहा जा सकता। हम ब्रह्मा बाबा को भगवान नहीं कहते, बल्कि उनके तन में भगवान प्रवेश करते थे। जो गुरु स्वयं को भगवान कहते हैं, उनसे पूछिये, क्या वे ब्रह्मा-विष्णु-शंकर के रचयिता हैं, क्या वे निराकार हैं, क्या वे ज्ञान के सागर हैं, क्या वे सम्पूर्ण पवित्र हैं? स्पष्ट है कि नहीं है। भगवान आकर ज्ञान देते हैं, वे राजयोग सिखाकर मनुष्यात्माओं को सम्पूर्ण बनाते हैं, वे सतयुगी नई सृष्टि की स्थापना करते हैं, वे शिष्य नहीं अपने बच्चे बनाते हैं। वे सबकी प्यार से पालना करते हैं, वे शास्त्र नहीं पढ़ते, वे धन इकट्ठा नहीं करते, मुख्य बात वे सभी को पवित्र व सात्विक बनाते हैं। जहाँ ये लक्षण दिखाई दें, समझ लो वहीं भगवान अपना कर्त्तव्य कर रहे हैं।

प्रश्न -आप कहते हैं भगवान भारत में ही आते हैं -ऐसा क्यों? फिर तो भगवान भी पक्षपाती माने जाएंगे। भारत में ऐसा क्या है जो यहीं वे आते हैं?

उत्तर -भारत महान देश है, ये देवभूमि है, यही स्थान दो युग तक स्वर्ग था। यहीं पर पवित्रता की मान्यता है। यही धर्मभूमि व अध्यात्म की भूमि है। विदेशों में कहीं भी यदि किसी को शान्ति की प्यास उठती है, जो भी अध्यात्म की खोज करना चाहते हैं या जो भी योग सीखना चाहते हैं, तो वे भारत में ही आते हैं। भारत ही दो युग तक स्वर्ग था। भारत पवित्र भूमि है, इसलिए भारत को पुन: स्वर्ग बनाने के लिए उन्हें यहीं आना पड़ेगा। पाश्चात्य देशों में तो अति तामसिकता, अति अपवित्रता व अति भौतिकवाद है। आज तो वहाँ ये स्थिति है कि वे भगवान का नाम लेना भी पसंद नहीं करते, तब भला वहाँ भगवान कैसे आयेगा। भगवान को अति प्यार करने वाली उसकी महानात्माएं यहीं है। इसलिए भारत ही

मन की बातें

- ब्र.कु.सूर्य

भगवान की जन्मभूमि व कर्मभूमि है। भारत ही ऐसा देश है जहाँ सर्व धर्मों का सम्मान होता है, इसलिए सर्व का कल्याण करने हेतु भगवान यहीं आते हैं।

प्रश्न -क्या भगवान से मिलना सम्भव है? सुना है प्रभु-मिलन के लिए तो हजारों वर्ष कठिन तपस्या करनी पड़ती है। आज तक वह किसी को मिला ही नहीं। आप तो कहते हो, वे हमसे मिलने आते हैं।

उत्तर -उत्तर तो आपने दे ही दिया। हम उनसे नहीं मिल पाये। यह सत्य है कि २५०० वर्ष से हमने भक्ति व तप किये, परन्तु हम प्रभु को जान भी नहीं पाये इसलिए उन्हें ही हमसे मिलने आना होता है। पहले वे आकर हमें अपनी सत्य पहचान देते हैं। जब हम भगवान को जानते ही नहीं तो भला हम उन्हें ढूढेंगे कहाँ...सोचो हमारे मन में प्रभु मिलन की इच्छा होती है, इससे ही सिद्ध है कि हमें वे मिलते अवश्य हैं। परन्तु हम उनसे मिलने नहीं जा सकते, वे ही हमसे मिलने आते हैं। उनके आने का एक समय भी निश्चित होता है। जब कल्प का अन्त होता है और कलियुग समाप्ति की ओर जाता है, तब वे स्वयं आते हैं -केवल हमसे मिलने के लिए नहीं, बल्कि हमें मनुष्य से देवता बनाने के लिए और कलियुगी दुनिया को सतयुग में बदलने के लिए। इस समय प्रभु मिलन हो रहा है, वह अपना पुनीत प्यार दे रहा है, वह शक्तियाँ दे रहा है, वह राजयोग सिखा रहा है, परन्तु इसके लिए स्वयं को पवित्र बनाना होगा।

प्रश्न -हमने सुना है कि ब्रह्माकुमार-कुमारियां कहते हैं कि हमें भगवान पढ़ाते हैं। हमने प्रभुमिलन का सुख लिया है। वे अब भी हमसे मिलने आते हैं, परन्तु विश्वास नहीं होता। कहीं आप भ्रमित तो नहीं हो गये हो। भला भगवान से मिलना इतना सस्ता है क्या?

उत्तर -लाखों-लाखों बुद्धिमान लोग इसके साथी हैं कि हमें भगवान ही पढ़ाते हैं। भगवान ही ज्ञान के सागर हैं, वे शास्त्रों का ज्ञान नहीं देते, उनका ज्ञान लेकर कुछ भी जानना शेष नहीं रह जाता, सभी प्रश्नों का उत्तर मिल जाता है व सत्य की खोज समाप्त हो जाती है।

वे आते हैं। हजारों की सभा में आते हैं। उनके अवतरित होते ही सबको परमात्म-मिलन का सुख अनुभव होने लगता है। सभा में परमात्म-प्यार की लहरें फैल जाती हैं। सभी प्रभु-प्रेम में मग्न हो जाते हैं, अनेकों को वरदान प्राप्त होते हैं व सभी के चित्त शान्त हो जाते हैं। प्रत्यक्ष अनुभूतियों से सिद्ध हो जाता है कि सामने कोई महानात्मा नहीं बल्कि स्वयं परमात्मा ही मनुष्य तन में अवतरित है। आप बुद्धिमान हैं। आपने परमात्मा के आने की बात सुनी। यह सुनकर क्या आपके मन में ये विचार नहीं उठा कि देखें तो सही। आप इस सत्य को देखिये, परन्तु इसके लिए एक वर्ष तक पवित्र रहकर ईश्वरीय ज्ञान लेना होगा।

प्रश्न -शिव का अवतरण होता है, सचमुच संसार की सबसे बड़ी व चमत्कारिक घटना है। परन्तु इस महान घटना से सभी अनभिज्ञ क्यों?

उत्तर -नहीं, सभी अनभिज्ञ नहीं है। सर्व संचार माध्यमों से व अन्य तरीकों से ये संदेश जन-जन को दिया जा रहा है। देवकुल की आत्माएं परमात्म-मिलन का सुख पा रही हैं। परन्तु आप जान सकते हैं ये प्रभु-मिलन उन्हें ही प्राप्त होता है जो बहुत पुण्यात्माएं हैं, जो भगवान को बहुत प्यार करते हैं और जिनमें पवित्रता है।

होली ...पेज 2 शेष अब भी समय है कि मनुष्य ज्ञान रंग द्वारा अपने हृदय को प्रभु के रंग में रंग ले। ऐसी होली ईश्वरीय मर्यादा की ही है। जब तक मनुष्य स्वयं भी ज्ञान में न रंगा जाये और दूसरों पर भी ज्ञान-वर्षा न करे तब तक वह आनंदित तथा प्रफुल्लित नहीं हो सकता और तब तक परमात्मा से उसका मंगल-मिलन भी नहीं हो सकता। आज इस संसार में अज्ञानी अर्थात् मायावी मनुष्य काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार के वशीभूत संस्कारों से दूसरों का अमंगल करता है। वह परमात्मा से मंगल-मिलन तभी मना सकता है, जब ज्ञान सागर में आत्मा को धो (रंग) डाले अर्थात् पुराने दूषित आचार-विचार मनोविकार कोज्ञान-योग की अग्नि में दग्ध कर दे। यही वास्तविक होली है। इस प्रकार, होली का वास्तविक रहस्य समझाकर अब परमपिता परमात्मा 'शिव'कहते हैं - ''हे वत्सो, आत्मा को ईश्वरीय ज्ञान के रंग में रंगकर पवित्र बनो और आत्मा को अविनाशी मानते हुए, आत्मा के स्वरूप में स्थित हो जाओ।''

सोलापुर। शिव मंदिर की प्राणप्रतिष्ठा समारोह में ब्र.कु.सोमप्रभा का पुष्पमाला द्वारा स्वागत करते हुए श्री शैल के जगतगुरु शंकराचार्य महास्वामी।

विजयनगर (इंदौर)। 'प्लेटिनम जुबली' कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते हुए विधायक रमेश मंदोला, पार्षद सुनील दाभाडे, लाल बहादूर वर्मा, मुकेश चौकसे, ब्र.कु.ममता।